‘अब के बिछुड़े’: नारी सशक्तिकरण का प्रेम पत्र

-डॉ. सब्ज़ार अहमद बट्ट

सारांश: नारी सशक्तिकरण का भाव लिए और नारी उत्पीडन की बात करने वाले न जाने कितने ही उपन्यास दिन–प्रतिदिन प्रकाशित होते रहते हैं। नारी की वेदना को दर्शाने के लिए लेखक कभी पति को खलनायक बनाता है तो कभी समाज के अन्य जीवियों को परंतु अब के बिछुड़े उपन्यास में लेखिका ने महिला सशक्तिकरण के सजीव दृश्य को पाठकों के समक्ष लाने के लिए किसी भी परंपरागत माध्यम को न चुनकर इन सब से परे प्रेम के माध्यम से नारी की मनःस्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास न केवल नारी सशक्तिकरण की बात करता है बल्कि इस उपन्यास में प्रेम के कारण मन में उठने वाले मनोहर भावों के दृश्य प्रस्तुत करने के साथ-साथ नारी के मन में चल रहे विरोधाभास को भी प्रस्तुत किया है। यह नारी की सबसे बड़ी विडंबना है कि प्रेम जैसे पवित्र तथा सुखमय सम्बन्ध स्थापित करने में भी नारी को संकोच होता है। कारण जो भी हो पर है तो सत्य। इस उपन्यास में नारी-मन के कोमल पक्ष के के दर्शन भो होते हैं और आधुनिक सोच रखने वाली नारी का विरोधी रूप भी देखने को मिलता है।

बीज शब्द:सशक्तिकरण, अंतर्मन, सहनशीलता, शापग्रस्त,

किसी भी राष्ट्र एवं समाज की विकास-यात्रा में नारी की भागीदारी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नारी की उपेक्षा करने वाला समाज कभी भी सभ्य समाज नहीं कहलाया जा सकता है। अतः नारी सशक्तिकरण की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित करना वर्तमान समाज के प्रत्येक समाज सुधारकों जैसे धर्म गुरुओं, राजनेताओं,आदि का उच्चतर उद्देश्य होना चाहिए। नारी सशक्तिकरण पीड़ित एवं दबी हुई नारियों में आत्मविश्वास का संचार करती है। यदि हम रचनाकार को भी ऐसे ही समाज सुधारकों की श्रेणी में एक विशिष्ठ स्थान पर रेखांकित करे तो कोई आपति न होगी। रचनाकार अपने समाज को पूर्ण रूप से आत्मसात कर उसमे रहने वाले लोगों के जीवन को ज्यूँ का त्यूं अपने रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। किसी भी देश के परिवेश को यथार्थ रूप से चित्रित करना ही एक सफल साहित्यकार की निशानी होती है। वह सदैव इस बात से चिंतामुक्त रहता है की समाज का वास्तविक बिम्ब लोगों के समक्ष रखने से क्या परिणाम होगा। ऐसे ही रचनाकारों में सुदर्शन प्रियदर्शिनी का नाम भी उल्लेखनीय है। उन्होंने न केवल भारतीय बल्कि पाश्चात्य परिवेश से भी पाठकों को अवगत कराया है। लाहोर पाकिस्तान में जन्मी सुदर्शन प्रियदर्शिनी वर्तमान में अमरीकी में रह रही है और वही पर हिंदी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने में कार्यरत है। उन्होंने अब तक कई उपन्यास, कहानी-संग्रह एवं कविता-संग्रह लिखकर अपनी लेखन प्रतिबा का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी द्वारा रचित *अब के बिछुड़े* उपन्यास नारी के विभिन्न पक्षों को केंद्रीकृत करके लिखा गया एक बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में आलोच्य लेखिका ने पत्र शैली का प्रयोग किया है। इस उपन्यास का प्रथम संस्करण सन् 2014 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में प्रेम के स्वरूप का प्रत्येक स्तर पर साक्षात्कार हो जाता है परन्तु यद्यपि उस प्रेम के आवरण के भीतर झाँक कर देखा जाए तो वहां नारी के देह पर लगे अनगिनत रिसते हुए घावों का ही चित्र दिखाई देता है। यूँ तो लेखिका ने प्रेम के कारण मानुष के अंतर्मन में होने वाले बदलाव का बड़े ही सजीव ढंग से चित्रण किया है। उपन्यास की नायिका एवं कथावाचक दिव्या के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक प्रेमी के लिए दूसरे प्रेमी का अस्तित्व अन्य सभी से सर्वोपरि हो जाता है और हर क्षण मात्र उसी के समक्ष रहने का सोंचता है। "*अरे मेरे सौन्दर्य देवता ! यह तुमने क्या जादू कर दिया कि सारा ब्रह्माण्ड फीका लगने लगा है। जी चाहता है कि, तुम्हें सामने बिठाकर देखा करूँ...।*"[1]

लेखिका ने बड़े मार्मिक ढंग से प्रेमियों के मन की विभिन्न अवस्थाओं को प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया है कि एक के दूर होने पर दूसरे के मन में किस प्रकार एक भयंकर तूफ़ान उठने लगता है। वह सदैव अपने प्रेमी के लिए चिंतित रहता है। अपने आस-पास होने वाली प्राकृतिक चीज़े उसके लिए जैसे किसी अनहोनी की सूचक बनती है। "*बनेर पर कौआ बोले तब, बिल्ली रास्ता काट जाए तब, कहीं दायीं आँख फरक जाये तब...। कहीं टिटहरी की टी-टी सुनाई दे जाए तब, कुत्ते रोने लगे तब...मन किसी भयावह अपशगुन के दहल जाता है।*[2]

आलोच्य उपन्यास में लेखिका ने बड़ी चतुराई से प्रेमिका द्वारा अपने प्रेमी को लिखे गए प्रेम पत्र के माध्यम से नारी के ऊपर लगे प्रतिबन्ध को पाठकों के समक्ष रखने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने दिखाया है कि स्त्री-पुरुष के बीच किए जाने वाला भेदभाव किस प्रकार नारी की आकांक्षाओं का दमन करती है। जो चीज़ पुरुष के लिए गौरव एवं सुखमय होती है वही चीज़ स्त्री के लिए कई समस्याओं को जन्म देती है। लेखिका ने बढती उम्र का स्त्री-पुरुष के जीवन पर पड़ने वाले अलग-अलग प्रभाव का चित्रण इस प्रकार किया है। "*आदमी की उम्र उस के साथ बहुत कुछ जोड़ती जाती है, लेकिन स्त्री के दिन-बीतते ही उस से बहुत कुछ छीन लेते हैं। नारी उस विशिष्ट उम्र के बगैर भिखारिन है और पुरुष उसी के साथ बादशाह। इसीलिए वह अपनी अन्य कैदों के साथ उम्र के कारावास की सोखचों के पीछे खड़ी-किसी फूल के लिए तरस तो सकती है, उसे पा नहीं सकती, उसे छू नहीं सकती।*"[3]

इस से बड़ी विडंबना क्या हो सकती है कि इस समाज में अल्पायु की लड़की का विवाह उससे बड़ी आयु के पुरुष के साथ ख़ुशी के साथ किया जाता है परंतु यदि कहीं स्थिति इसके विपरीत दिखाई दे अर्थात छोटे लड़के के साथ बड़ी लड़की का होना अपमानजनक बात समझी जाती है। नारी पीढ़ी दर पीढ़ी पुरुषों की क्रूरता का शिकार होती रही है परन्तु आज स्थिति बदल रही है। आज की नारी घर की चार-दीवारी में कैद

नीरवतापूर्वक पुरुषों द्वारा किए गए शोषण को सहने के बजाय बड़ी वीरता का प्रदर्शन करते हुए उनका सामना करती है। यदि वह अपने आत्मसम्मान के लिए आक्रामक रूप धारण करती है तो उसके लिए भी यह पुरुष-प्रधान समाज ही उत्तरदायी है। वर्तमान समाज की नारी सहनशीलता का प्रमाण न होकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए लड़ने वाली योद्धा है ।अब वह अपनी स्वतंत्रता के लिए किसी भी सीमा को लांगने के लिए तैयार है।"*मैं नारी की पैरवी नहीं करुँगी पर उसे भी युग ने सिखा दिया है- कि सीता और सावित्री बनकर आजतक उसे पुरुष का अपमान और उपेक्षा ही मिली है- उस ने अब तक सहा ही सहा है- अब और वह नहीं सहेगी*।[4]

नारी की इस बदलती मानसिकता को अन्य जगह पर भी दर्शाया गया है- "*बुरा न मानना...पर मालूम नहीं- यह सब कैसे आज लावे सा बह गया है। भावना एक तरफ और सत्य का पहलू दूसरी तरफ...। बहुत सहा है, शायद और न सहेगी*।"[5]

यह निर्विवाद बात है की प्राचीन काल से ही यह समाज पुरुषों की स्वार्थ पूर्ती के लिए स्त्रियों की बली देता रहा है। कभी अपने माता-पिता की ख़ुशी के लिए अपनी इच्छा प्रतिकूल विवाह करती है, कभी अपने पति के अहम् के लिए अपनी इच्छाओं का दमन तो कभी अपनी संतान के भविष्य के समक्ष अपने सपनों का समर्पण करती आ रही है। वह इस जुलस्ती आग में न जाने कब से अपनी और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की आहुति देती रही है परन्तु वह इस आग में जल कर लुप्त नहीं हुई बल्कि उन आग के लपेटों से लड़ते हुए निकलकर दूसरी परीक्षा के लिए तैयार हो जाती है। "*मुझे बार-बार लौह-सलाखों पर चढ़ाकर-झुलसाने की चेष्टताएँ की गई है- किन्तु मैं झुलसने के बजाय – उनके अहम् को रौंदती फिर जिंदा हो जाती रही हूँ...जिंदा तो होती जा रही हूँ...जिंदा तो हो जाती हूँ- लेकिन वह जीना कैसा होता है। कौन जानता है... अपने ही जन्मदाता की बनाई हुई लौह-सलाखाओं पर से उतर कर जिंदा लौटना और फिर अगली परीक्षा के लिए तैयार हो जाना-कैसा होता है...यह मैं ही जानती हूँ...*।[6]

यह मानव-समाज की सबसे बड़ी त्रासदी है कि जिस स्त्री की कोख़ से जन्म लेकर मनुष्य इस समाज में निर्मित होता है उसी स्त्री को सदियों से अमानवीय पीड़ा सहने के लिए विवश कर देता है। वह उस शापग्रस्त आत्मा की भांति अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करती है जो वायुमंडल में भटकती रहती है। उसे हर जन्म में दुःख भोगने के लिए जैसे श्राप दिया गया हो। सारी पारिवारिक क्रूरताएँ एवं प्रताड़ना उस पर ही छोड़ दी जाती है। उसका जीवन साथी, सुख-दुःख का हमसफ़र कहे जाने वाला उसका पति यदि स्वयं कुछ यातनाएँ पहुँचाने से पीछे रहता है तो वह कमी वह अपने परिवार वालों से पूरी कर देता है। कभी उसे प्राणी ना समझकर मात्र अपनी संपत्ति मानकर उसके शरीर को नोंच दिया जाता है तो कभी ससुराल की इच्छानुसार दहेज न लाने के कारण उसे

जला दिया जाता है। लेखिका उस समाज की कल्पना करती है जहाँ नारी को भोग वस्तु न मानकर उसे भी अन्य मानव जाती की तरह उसका आदर हो, उसके जीवन पर मात्र उसका अधिकार हो तथा निर्णय लेनी की स्वतंत्रता हो। यह तथाकथित सभ्य समाज नारी को विभिन्न उपाधियों से विभूषित तो करता है परन्तु वह इस बात से अनभिज्ञ है कि उसी देवी का वह किस प्रकार शोषण कर रहा है। "*वह समाज, वह धर्म मुझे अभी ढूँढना है जो स्त्री को केवल अपनी ही भांति मानवीय समझकर उसकी ही वैयक्तिकतामें आँकें। भगवान की बनाई हुई इस धरती पर इससे बड़ी उल्ट बांसी क्या होगी कि नारी को अर्ध-नारीश्वर और देवी की उपाधियों से विभूषित करने वाला मनुष्य वास्तव में उसकी कैसी दुर्दशा करता है*।"[7]

नारी वह गली है जिसके द्वारा से ही हम संस्कृति के मुख्य द्वार तक पहुँच सकते हैं अर्थात् किसी भी देश की संस्कृति को समझने के लिए वहां की स्त्री को समझना आवश्यक है। नारी के प्रति इस समाज के दृष्टिकोण ने नारी के मन में भय एवं शंका उत्पन्न कर दी है। वह प्रेम जैसा शब्द भी उसके लिए अर्थहीन हो गया है और यहाँ तक कि वह अब किसी भी चीज़ पर विश्वास नहीं जुटा पाती। उसे पुरुष की आँखों में प्रेम की जगह हवस दिखाई देती है और विवाह को वह दैहिक धर्म एवं समझौता मात्र समझती है। दिन-प्रतिदिन उसके ऊपर होने वाले अत्याचारों के कारण ही उसके मन में यह नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ है। कभी उसे पुरुष की दरिद्रता का शिकार होना पड़ता है तो कभी उसकी दया दृष्टि को सहन करना पड़ता है और यह घटनाएँ उसके जीवन में निरंतर घटती रहती है। "*नारी केवल पुरुष की नृशंसता का ही शिकार नहीं बनती उसकी ठंडी दर्याद्रता की भी भाजन बनती है। दया की दृष्टि झेलना- नृशंसता की क्रूरता से भी बढकर होता है। ते सब नारी के जीवन में यो घटित होते हैं जैसे रोज़ की उसकी दिनचर्या। किसी बिखरे फूल की पंखुडियों को देखने की इच्छा हो तो नारी-मन के अन्दर झाँककर देख लेना*।"[8]

निष्कर्षतः कहा जाए तो यह उपन्यास प्रेम के धरातल पर लिखा गया नारी के मन के भीतर झाँककर उसकी मनःस्थिति को अभिव्यक्त करने वाला एक सशक्त उपन्यास है। लेखिका ने प्रेम-पत्र के माध्यम से नारी-जीवन के प्रत्येक पक्ष को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। लेखिका ने जहाँ एक ओर जीवन में प्रेम की महत्ता का वर्णन किया है तो वही दूसरी ओर प्रेम के नाम पर नारी के ऊपर होने वाले शोषण का भी विस्तार किया है। यह उपन्यास न केवल एक प्रेमिका द्वारा अपने प्रेमी को लिखे गए प्रेम पत्रों का तानाबाना है बल्कि उन पत्रों के मध्य नारी-सशक्तिकरण का स्वर भी गूंजता है जो पाठक को नारी के प्रति प्रचलित दृष्टिकोण को बदलने पर विवश कर देती है।

संदर्भ:

1. प्रियदर्शनी सुदर्शन, अब के बिछुड़े, नमन प्रकाशन.2014. पृ. 5
2. वही... पृ. 144
3. वही... पृ. 7
4. वही... पृ. 21
5. वही... पृ. 22
6. वही... पृ. 74
7. वही... पृ. 87
8. वही... पृ. 105

डॉ. सब्ज़ार अहमद बट्ट
हिंदी अनुवादक, एनआईटी श्रीनगर
जम्मू व कश्मीर
sabzargani@gmail.com
9596193687